Volume-9, No. 2 Aug.-2022, pp. Hin.07-12

समग्र दृष्टिकोण के विकास के परिप्रेक्ष्य में श्रीरामचरितमानस का अवलोकन

डा0 मनीषा चौहान, असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग
श्रीनारायण गर्ल्स पी0जी0 कालेज, उन्नाव उत्तर–प्रदेश भारत।

सारांश–
जीवन के प्रति समग्र दृष्टिकोण होना किसी भी व्यक्ति के लिए अत्यंत आवश्यक है। समग्र दृष्टिकोण का तात्पर्य है सर्वव्यापक ढंग से वास्तविकता को देखना। सर्वव्यापी ढंग से वास्तविकता को जानने के लिए व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की आवश्यकता होती है। इसके लिए उचित एवं पूर्ण शिक्षा की आवश्यकता होती है जो भावनाओं को शुद्ध एवं नियंत्रित करके संपूर्ण समाज के प्रति समग्र एवं सतत् दृष्टिकोण विकसित करे। परन्तु भौतिकतावाद के अवधारणा पर आधारित शिक्षा कभी भी व्यक्ति का सर्वांगीण विकास नहीं कर सकती। वर्तमान शिक्षा पद्धति अपूर्ण, अवास्तविक तथा मानवता के हितों से कोसों दूर है। जैसे–जैसे भौतिक संसाधनों में वृद्धि होती जा रही है वैसे वैसे अन्तःमनों की स्थिति विकराल रुप धारण करती जा रही है। अविश्वास, घृणा, स्वार्थ, अभिमान, असंतोष, उद्विग्नता आदि बढ़ते जा रहे हैं। सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना एवं समग्र विकास की अवधारणा को ध्यान में रखते हुए प्राचीन भारतीय ग्रन्थों के साथ–साथ आज गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस की शिक्षा को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करना अत्यंत प्रासंगिक जान पड़ता है क्योंकि ये एक ऐसा सर्वसुलभ व व्यवहारिक ग्रन्थ है जो मर्यादापूर्ण आचरण की प्रेरणा देता है।

मुख्यशब्द– समग्र दृष्टिकोण, सर्वांगीण विकास, शिक्षा प्रणाली, मूल्य, मर्यादापूर्ण आचरण

समग्र दृष्टिकोण हमारे जीवन के लिये अत्यधिक आवश्यक है। समग्र दृष्टिकोण का अर्थ सर्वव्यापी ढंग से वास्तविकता को देखना। व्यक्ति में समग्र दृष्टिकोण का विकास तभी किया जा सकता है जब शिक्षा द्वारा उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो। समग्र विकास के अन्तर्गत शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, सामाजिक व संवेगात्मक विकास करने वाली शिक्षा की आवश्यकता होगी। मात्र किताबी ज्ञान पर आधारित तथाकथित शिक्षा के द्वारा उच्च शिक्षा तक पंहुचा जा सकता है परन्तु अन्य पाठ्य सहगामी क्रियाओं की शिक्षा व प्रशिक्षण के बिना व्यक्तित्व के समग्र विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। उपयुक्त शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति जीवन के प्रत्येक आयाम को चिंतन में समाहित कर पाता है। उचित शिक्षा के द्वारा ही भावनाएं शुद्ध होती हैं और व्यक्ति संपूर्ण समाज के प्रति समग्र एवं सतत् दृष्टिकोण विकसित करता है। शिक्षा ही व्यक्ति को उसकी क्षमताओं के अनुरुप विकसित करके सत्य एवं असत्य का बोध कराती हैं। परन्तु पाश्चात्य भौतिकवाद की अवधारणा पर आधारित मैकाले की शिक्षा से व्यक्ति के समग्र विकास की अपेक्षा करना बेमानी ही होगी। अपूर्ण एवं अनुचित शिक्षा के द्वारा सुखों की प्राप्ति एवं दुखों की निवृत्ति के जो उपाय किये जा रहे हैं वे सभी अपूर्ण अवास्तविक व मानवता के हितों से कोसों दूर हैं। मानव जीवन की उन्नति के उचित उपायों को न अपनाने से प्रगति के लिये सतत् प्रयत्नशील होते हुए भी असफल हो रहे हैं। देश में वाह्य दुख निवृत्ति के पर्याप्त साधन उपलब्ध हैं, भौतिक संसाधनों के नित्य नये आविष्कार बढ़ते जा रहे हैं परन्तु अन्तःमनों की स्थिति विकराल होती जा रही है। श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, करुणा, दया, सहयोग आदि के स्थान पर अविश्वास, घृणा, स्वार्थ, अभिमान, असंतोष, खिन्नता, उद्विग्नता, नास्तिकता आदि बढ़ते जा रहे हैं जिससे समाज में अव्यवस्था उत्पन्न हो रही है। इसके निराकरण का एक मात्र उपाय शिक्षा के द्वारा समग्र दृष्टिकोण का विकास है। यद्यपि राष्ट्रीयशिक्षा नीति–2020 में भी व्यक्ति के समग्र विकास की आवश्यकता को समाहित किया गया है जिसके लिए शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर अनेक प्रावधान

किये गये हैं परन्तु इस नीति के लागू होने के बाद धरातल पर इसके कियान्वयन में विभिन्न कारणों से अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जिसमें एक प्रमुख कारण शिक्षा में सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों का अभाव है। जबकि मानव समाज की किसी भी समस्या के समाधान हेतु शासकीय प्रयासों की तुलना में उस समाज के सदस्यों की भूमिका एवं उसके सांस्कृतिक मूल्य अधिक प्रभाव डालते हैं। समग्र शिक्षा की अवधारणा को ध्यान में रखते हुये भारतीय संस्कृति के आधार वेद, पुराण, गीता, रामायण के साथ साथ गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस की शिक्षा को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करना अत्यधिक प्रासंगिक जान पड़ता है। क्योंकि श्रीरामचरितमानस संपूर्ण व्यवहारिक जीवन को समेटे हुए एक ऐसा ग्रन्थ है जो व्यक्ति का आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा व्यवहारिक सभी क्षेत्रों में मार्गदर्शन करता है।

श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी पग–पग पर नीति निरुपण कर समाज को सत आचरण, नियम व मर्यादा पालन की शिक्षा देते हैं। आचरण एवं व्यवहार की वह पद्धति जिसमें अपना हित हो परन्तु दूसरों को कष्ट या हानि न पंहुचे और राष्ट्र व समाज में प्रत्येक जीव के हितों की रक्षा के लिए निश्चित आचारण व्यवहार की निति को श्रीरामचरितमानस में वर्णित किया गया है, जो वर्तमान समय में बहुत प्रासंगिक है।

व्यक्ति जिस प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण में रहता है वहीं से उसकी प्रगति के संपूर्ण मार्ग निर्धारित होते हैं। श्रीरामचरितमानस में वर्णित प्रकृति चित्रण, पर्यावरणीय नैतिकता एवं संचेतना को आज की शिक्षा में सम्मिलित किये जाने की नितांत आवश्यकता है। आज पर्यावरण प्रदूषण वैज्ञानिकों एवं चिंतनशील मनुष्यों के लिए घोर चिंता का विषय बन रहे हैं। ऐसे में भारतीय संस्कृति के अनेक ग्रंथों के साथ साथ श्रीरामचरितमानस का अध्ययन व विश्लेषण अत्यंत लाभप्रद हो सकता है क्योंकि श्रीरामचरितमानस का पाठ एवं अध्ययन पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर सर्वसुलभ है। श्रीरामचरितमानस में विभिन्न प्राकृतिक पदार्थों को आवश्यकतानुसार कृतज्ञतापूर्वक उपयोग करने की संस्कृति सांमजस्य आधारित समावेशी संस्कृति को दर्शाती है, जैसे वृक्ष काटने को अपराध माना गया है परन्तु वृक्ष से फल लेकर खाने को उचित माना गया है।

रीझि खीझि गुरुदेव सिष सखा सुविहित साधू।
तोरि खाहु फल होई भलु तरु काटे अपराधू ।।

गोस्वामीजी द्वारा वर्णित किया गया है कि जहां सम्भव हो प्रत्येक व्यक्ति को स्वप्रेरणा से वृक्ष लगाना चाहिए। वन में सीताजी एवं लक्ष्मणजी द्वारा वृक्षारोपण का उदाहरण मिलता है–

सुमन वाटिका सबहिं लगाई। विविध भांति करि जतन बनाई।।
तुलसी तरुवर विविध सुहाए। कहुँ कहुँ सिय कहुँ लखन लगाए।। (अयोध्याकाण्ड)

शुभ अवसर पर वृक्षा रोपण की संस्कृति का चित्रण भी श्रीरामचरितमानस में किया गया है जोकि वर्तमान प्रदूषण संकट से बचाने का सबसे अच्छा उपाय है, रामचन्द्रजी के विवाह के उपरान्त अयोध्या में विभिन्न पौधों को रोपे जाने का वर्णन है–

सफल पूगफल कदलि रसाला। रोपे बकुल कदम्ब तमाला।।
लगे सुभग तरु परसत धरनी। मनिमय आलबाल कल करनी।। (बालकाण्ड)

रामराज्य में सभी स्वस्थ्य एवं निरोगी थे, शुद्ध पेय जल से समस्त नदियां परिपूर्ण थी–

सरिता सकल बहहिं बर बारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी।। (उत्तरकाण्ड)

शुद्ध वायु एवं जल के बिना विकास की संकल्पना नहीं की जा सकती। यदि हम रामराज्य के अभिलाषी हैं तो तुलसीदासजी की संकल्पना के अनुरुप शुद्ध वायु एवं पेयजल की उपलब्धता हेतु अतिभौतिकता व अतिलिप्सा का त्याग करना होगा। जब संपूर्ण समाज पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील होगा तभी प्रकृति भी अपनी मर्यादा में रहेगी। पृथ्वी पर रामराज्य की स्थापना का स्वप्न सबके परिश्रम, समर्पण एवं सतत् प्रयत्न से ही साकार होगा।

श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदासजी पर्यावरण संपन्नता के चरमोत्कर्ष को बताते हुए कहते हैं कि पर्यावरण संरक्षण हेतु सतत् मानवीय प्रयास आवश्यक है क्योंकि प्रकृति का मनुष्य के प्रति सकारात्मक स्वरुप तभी संभव है जब व्यक्ति एवं पर्यावरण के मध्य सकारात्मक संबन्ध होंगे। मानव समाज एवं प्रकृति का पारस्परिक समन्वय अत्यंत आवश्यक है। गुणवान एवं शील पुरुष रामचन्द्रजी जिस स्थान पर भी रहे वहां प्रकृति अपने अद्भुत सौंदर्य में चित्रित है–

जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया। करहिं मेघ तहँ तहँ नभ छाया।। (अरण्यकाण्ड)

अर्थात जहां जहां प्रभु राम जाते हैं वहां आसमान में बादल छाया करते हैं।

सुन्दर वन कुसुमित अति सोभा। गुंजत मधुप निकर मधु लोभा।।
कंद मूल फल पत्र सुहाए। भए बहुत तग ते प्रभु आए।। (किष्किंधाकाण्ड)

सुन्दर वन फूलों से अत्यंत सुशोभित है। मधु के लोभ से भौंरों के समूह गुंजार कर रहे हैं। जब से प्रभु आए हैं तब से वन में सुंदर कंद, मूल, फल और पत्तों की बहुतायत हो गयी है।

उभय बीच श्री सोहइ कैसी। ब्रह्म जीव बिच माया जैसी।।
सरिता बन गिरि अवघट घाटा। पति पहिचानि देहिं बर बाटा।। (अरण्यकाण्ड)

दोनों (रामचन्द्र व लक्ष्मण) के बीच जानकी जी कैसी (ऐसे) सुशोभित हैं जैसे ब्रह्म एवं जीव के बीच माया हो। नदी, वन, पर्वत और दुर्गम घाटियां सभी अपने स्वामी को पहचान कर सुन्दर रास्ता दे देते हैं।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने स्पष्ट किया है कि रामचन्द्रजी की उपस्थिति से पर्यावरणीय चेतना तो संपन्न होती ही है उनके प्रति आस्था रखने वाले जनों के कष्ट भी समाप्त हो जाते हैं–

सो सुतंत्र अवलंब न आना। तेहि आधीन ग्यान बिग्याना।।
भगति ताति अनुपम सुखमूला। मिलइ जो संत होइँ अनुकूला।। (अरण्यकाण्ड)

मानव जाति ने ज्ञान एवं विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति तो की परंतु आध्यात्म से दूर हो गयी। ऐसे में भक्ति भाव के द्वारा ही स्वार्थपरता से निकालकर व्यक्ति में चेतना जागृत करके ही मानवता के कार्य हेतु प्रेरित किया जा सकता है।

परन्तु जब रामचन्द्रजी सीताजी के वियोग में होते हैं तो मानवीय चेतना एवं पर्यावरण के मध्य वियोग होने पर वातावरण गरम व प्रदूषणयुक्त हो जाता है–

कहेउ राम वियोग तब सीता। मो कंहु सकल भए विपरीता।।
नव तरु किसलय मनहुं कृसानू। कालनिशा सम निसि ससि भानू।।
कुबलय बिपिन कुंत बन सरिसा। बारिद तपत तेल जनु बरिसा।।
जे हित रहे करत तेइ पीरा। उरग स्वास सम त्रिविध सरीरा।। (सुन्दरकाण्ड)

रामचंद्रजी कहते हैं कि हे सीते! तुम्हारे वियोग में मेरे लिए सभी पदार्थ प्रतिकूल हो गये हैं। वृक्षों के कोमल पत्ते मानो अग्नि के समान, रात्रि कालरात्रि के समान, चन्द्रमा सूर्य के समान लग रहा है। कमल के वन भालों के वन के समान हो गये हैं। मेघ खौलता हुआ तेल बरसा रहे हैं, जो हित करने वाले थे वो ही अब पीड़ा देने लगे हैं। त्रिविध (शीतल, मंद, सुगंध) वायु सांप के श्वास के समान (जहरीली व गरम) हो गई है।

प्रकृति के सीमित एवं आवश्यकतानुसार दोहन से ही मानव जीवन सुखमय होगा। प्रकृति प्रदत्त वस्तु का उपयोग प्रकृति से छेड़छाड़ के बिना किए जाने का उदाहरण भी श्रीरामचरितमानस में मिलता है। लक्ष्मणजी को शक्ति लगने से वो मूर्छित हो जाते हैं। वैद्य सुषेन संजीवनी बूटी लाने के लिये कहते हैं। इसके लिए हनुमानजी जाते हैं परन्तु बूटी की पहचान न कर पाने के कारण वो पूरा पर्वत ही उठा लाते हैं। वैद्य सुषेन जीव रक्षा के उद्देश्य से जड़ी बूटी की आवश्यकता को इंगित करते हुए प्रकृति से अनुमति लेते हैं और आवश्यकतानुसार जड़ी बूटी प्राप्त करके लक्ष्मणजी का सफल उपचार करके उन्हें मूर्छा से बाहर लाते हैं। यह प्रसंग पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ मानव जीवन के लिये औषधीय वनस्पति के महत्व को भी दर्शाता है।

राम पादारविंद सिर नायउ आइ सुषेन।
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन।।
दोहा (55, लंकाकाण्ड)

देखा सैल न औषध चीन्हा। सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा।।
गहि गिरि निसि नभ धावक भयउ। अवधपुरी ऊपर कपि गयउ।।
हरषि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना।।
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई।। (लंकाकाण्ड)

वर्तमान समय में व्यक्ति का समग्र एवं समावेशी विकास करके ही पर्यावरणीय संरक्षण की शिक्षा श्रीरामचरितमानस के माध्यम से धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है। श्रीरामचरितमानस के अतिरिक्त ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं है जिसमें सांसारिक जीवों के जीवन के विभिन्न अंगों व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि का इतना हृदयस्पर्शी वर्णन किया गया हो। गोस्वामी तुलसीदासजी कृत श्रीरामचरितमानस पूर्णरुपेण अनुभवगम्य एवं व्यवहारिक है। इस ग्रन्थ में गोस्वामी जी ने कर्तव्यपरायणता एवं परस्पर सम्मान व स्नेह को प्राथमिकता प्रदान करते हुए मानव जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाने में अद्वितीय योगदान प्रदान किया है। साथ

ही साथ विभिन्न पात्रों के माध्यम से अनेक सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का कार्य किया है। जाति व्यवस्था और रुढ़ियों के कुचक्र को तोड़ने, सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को बनाए रखने में गोस्वामी जी ने श्रीरामचरितमानस की शिक्षा के रुप में जो योगदान दिया उसकी वर्तमान समय में अत्यधिक प्रासंगिकता है।

सामाजिक समरसता और मर्यादा का अद्भुत उदाहरण देखने को मिलता है जब रामचन्द्रजी के मित्र निषादराज द्वारा अपना नाम, जाति एवं गांव बताने पर भरत जी अपना रथ छोड़कर स्नेहपूर्वक उनकी ओर बढ़ जाते हैं–

राम सखा सुनि स्यंदन त्यागा। चले उतरि उमगत अनुरागा।।
गाऊँ जाति गुहँ नाउँ सुनाई। कीन्हि जोहारु माथ महिलाई।। (अयोध्याकाण्ड)

दण्डवत करते देख भरत जी ने उन्हें छाती से लगा लिया, हृदय में प्रेम समा नहीं रहा है मानों लक्ष्मण जी मिल गए हों।

करत दंडवत देखि तेहि भरत लीन उर लाई।
मनहु लखन सन भेंट भई प्रेमु न हृदय समाई।।
दोहा (193, अयोध्याकाण्ड)

इतना ही नहीं निषादराज द्वारा दूर से दण्डवत प्रणाम करने पर मुनि वशिष्ठ जैसे उच्च एवं प्रतिष्ठित ब्राह्मण निषादराज को अपनी बाहों में भरकर मिलते हैं–

प्रेम पुलक केवट कहि नामू। कीन्हि दूरि से दण्ड प्रनामू।।
राम सखा रिषि बरबस भेंटा। जनु महि लुठत सनेह समेटा।। (अयोध्याकाण्ड)

श्रीरामचरितमानस में वर्णित सामाजिक सद्भाव केवल जाति तक ही सीमित नहीं है। किष्किंधा में हनुमान जी अपने राजा सुग्रीव जी के साथ मित्रता करने का रामचन्द्र जी और लक्ष्मण जी से अनुरोध करते हैं–

नाथ सैल पर कपिपति रहई। सो सुग्रीव दास तव अहई।।
तेहि सन नाथ मयत्री कीजे। दीन जानि तेहि अभय करीजे।।(किष्किंधाकाण्ड)

रामचन्द्र जी भी सुग्रीव से प्रेमपूर्वक मिलते हैं और सुग्रीव भी रामचन्द्र जी को सीता से मिलाने का आश्वासन देते हैं।

कीन्हि प्रीति कहु बीच न राखा। लछिमन राम चरित सब भाषा।।
कह सुग्रीव नयन भरि बारी। मिलहि नाथ मिथिलेस कुमारी।। (किष्किंधाकाण्ड)

उपरोक्त प्रसंग से यह भी शिक्षा मिलती है कि कोई भी सामाजिक या राष्ट्रव्यापी अभियान जन–सहभागिता के बिना संभव नहीं है। सामाजिक समरसता के द्वारा राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को श्रीरामचरितमानस में एक महत्वपूर्ण उद्देश्य माना गया है।

राज्य से संबन्धित आचरण पद्धति के अन्तर्गत राजा, मंत्री, गुरु व प्रजा के कर्तव्यों का विशद् वर्णन मिलता है। रामचन्द्र जी द्वारा भ्राता भरत को राजा का कर्तव्य बताया गया है कि राजा को स्वयं को संकट में डालकर परिवार एवं प्रजा का पालन एवं रक्षा करनी चाहिए–

सो बिचारि सहि संकट भारी। काहु प्रजा परिवारु सुखारी।।
बांटी विपति सबहि मोहि भाई। तुम्हहि अवधि भरि बड़ि कठिनाई।। (अयोध्याकाण्ड)

राजा का कर्तव्य प्रजा के पालन व रक्षा के अतिरिक्त प्रजा को धर्माथ कार्यों में लगाने का भी होता है। अयोध्या के राजा दशरथ जी एवं रामचन्द्र जी द्वारा प्रजा को सदैव धर्म की रक्षा के लिए प्रेरित किया जाता था। रामराज्य में पुरुष एवं स्त्री सभी गुणों का आदर करने वाले तथा पंडित थे, कपट व धूर्तता से रहित व कृतज्ञता से पूर्ण थे–

सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी।।
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट समानी।। (उत्तरकाण्ड)

शत्रु को परास्त करने के लिए राजा को साम दाम दण्ड भेद अपनाने के लिये कहा गया है। रावण देवों के भोजन संबन्धी स्त्रोतों को रोककर उन्हें अपनी शरण में लाने का वर्णन किया गया है।

छुधा छीन बल हीन सुर सहजेहि मिलिहहिं आइ।
तब मारिहऊँ कि छाड़िहऊँ भली भाँति अपनाइ।।
दोहा (181, बालकाण्ड)

राजा को आवश्यकता पड़ने पर राजदण्ड का भी निर्धारण करना पड़ता है। शासन व्यवस्था बनाए रखने हेतु अनेक बार दण्ड का विधान करके भय स्थापित करना पड़ता है। श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने इसका वर्णन करते हुए लिखा है कि रामचन्द्रजी समुद्र तट पर बैठकर प्रतीक्षा करने लगे कि लंका जाने हेतु समुद्र उनकी सेना को मार्ग सुलभ करवाएगा परन्तु जब तीन दिन बीत जाने पर समुद्र ने रास्ता नहीं दिया तो रामचन्द्र जी समझ गये कि अब आग्रह से काम नहीं चलेगा बल्कि भय दिखाना पड़ेगा–

विनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति।।
दोहा (57, सुन्दरकाण्ड)

श्रीरामचरितमानस में तुलसीदास जी राजनीति बताते हुए लिखते हैं कि सचिव, वैद्य एवं गुरु यदि भय से प्रिय बोलने लगें तो राज्य, धर्म और शरीर का तेजी से नाश होता है–

सचिव वैद्य गुरु तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस।
राजधर्मतन तीनि कर होइ बेगिहीं नास।। दोहा (37, सुन्दरकाण्ड)

प्रीति और बैर सदैव बराबर वालों से करने की शिक्षा श्रीरामचरितमानस में मिलती है। अंगद रावण से कहते हैं कि शेर द्वारा मेढक का वध शोभा नहीं देता है–

प्रीति बिरोध समान सन करिअ नीति असि आहि।
जौं मृगपति बध मेडुकन्हि भल कि कहइ कोउ ताहि।। (23 ग, सुन्दरकाण्ड)

सत्य एवं शील से संबन्धित नीति बताते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा अन्य पात्रों में पर्याप्त मात्रा में शीलता मिलती है। रामचन्द्र जी का व्यवहार विषम परिस्थितियों में भी संतुलित रहा। गुह राज निषाद को भी उन्होंने सखा कहकर संबोधित किया।

कहेहु सत्य सब सखा सुजाना। मोहि दीन्ह पितु आयसु आना।। (अयोध्याकाण्ड)

महाराजा दशरथ ने सत्य के लिए ही राम को त्यागा था और उनके वियोग में अपने प्राणों को भी त्याग दिया था। सच्चा धर्म सत्याचरण में ही माना गया है। सत्य के समान कोई दूसरा धर्म नहीं माना गया–

रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रान जाहुँ परु वचन न जाई।।(अयोध्याकाण्ड)

रामचन्द्र जी क्षमा की भी प्रतिमूर्ति हैं। वे अपने शत्रुओं के प्रति भी क्षमा का भाव रखते हैं। रावण के अनाचारों के बाद भी उसका वध करके उसे परम धाम भेजना और विभीषण से शोक त्याग कर उसकी अन्त्येष्टि क्रिया करने का आग्रह करना उनके क्षमादान का एक उदाहरण है–

कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका। करहु क्रिया परिहरि सब सोका।। (लंकाकाण्ड)

गोस्वामी जी ने रामचन्द्र जी के परोपकारी चरित्र का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। रामचन्द्र जी सदैव अपने भक्तों का हित करते हैं। नारद के मन में अहंकार उपजता देख वे अविलम्ब उसे जड़ से उखाड़ने का उपाय करते हैं–

नारद कहेउ सहित अभिमाना। कृपा तुम्हारि सकल भगवाना।।
करुनानिधि मन दीख बिचारी। उर अंकुरेउ गरब तरु धारी।।
बेगि सो मैं डारिहऊँ उखारी। पन हमार सेवक हितकारी।।
मुनि कर हित मन कौतुक होई। अवसि उपाय करबि मैं सोई।। (बालकाण्ड)

ब्राह्मण, गौ, देवता और संतों के कल्याण हेतु रामचन्द्र जी का अवतार माना गया है।

विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार।। दोहा (192, बालकाण्ड)

उदात्त नायक के रुप में रामचन्द्र जी का चरित्र वर्तमान समय की शिक्षा में अत्यधिक प्रासंगिक है। एक तरफ उनका आदर्श हमारे बालकों के मन को ऊंचाईयों पर पंहुचाता है तो दूसरी तरफ उनकी नैतिकता बालकों के मन को सकारात्मक ऊर्जा देती है। उनका प्रत्येक कार्य हमारे विद्यार्थियों के विवेक को जगाकर उनका आत्मविश्वास बढ़ायेगा।

श्रीरामचरितमानस के नारी पात्र भी भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को महिमा प्रदान करते हैं। माता कौशल्या मातृत्व की जीवन्त प्रतिमा हैं परन्तु उन्होंने अपने पुत्र राम को इस प्रकार के संस्कार दिए कि वे माता कैकेयी के प्रति भी रामचन्द्र जी के मन में कोई बुरा भाव नहीं आया और वे सहर्ष वन को चले गये। माता कौशल्या रामचन्द्र जी से कहती हैं कि–

जौं केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता।।
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना। तौ कानन सत अवध समाना।। (अयोध्याकाण्ड)

अर्थात् हे तात! यदि केवल पिता की ही आज्ञा हो तो माता को बड़ी मानकर वन को मत जाओ, किन्तु यदि पिता माता दोनों ने वन जाने को कहा हो तो वन तुम्हारे लिए सैकड़ों अयोध्या के समान है।

सीता विनयशील संयमशील सहिष्णु एवं पतिव्रता हैं। आदर्श नारी के समस्त गुण उनमें दृष्टिगोचर होते हैं। रामचन्द्र जी द्वारा उनको वन न चलने को कहने पर वे कहती हैं–

प्राणनाथ तुम्ह बिनु जग माही। मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाही।।
जिय बिन देह नदी बिनु बारी। तैसिय नाथ पुरुष बिनु नारी।। (अयोध्याकाण्ड)

देवी सीता को रावण ने साम, दाम, दण्ड, भेद से प्राप्त करने का प्रयास किया परन्तु देवी सीता ने आदर्श स्त्री का परिचय दिया–

तृन धरि ओट कहति वैदेही। सुमिरि अवधपति परम सनेही।।

सुनु दस मुख खद्योत प्रकासा। कबहु कि नलिनी करइ विकासा।। (लंकाकाण्ड)

कैकेयी, उर्मिला, मन्दोदरी, सुमित्रा, माण्डवी, श्रुतिकीर्ति, सबरी आदि पात्र भी श्रीरामचरितमानस में विलक्षण रुप में चित्रित हुए हैं। श्रीरामचरितमानस के नारी पात्र आदर्श की स्थापना करने वाले, समायोजन करने वाले, तथा वीरता, त्याग, कर्मठता, सहिष्णुता, पतिव्रत को धारण करने वाले हैं और इसीलिए वर्तमान समय में सर्वाधिक प्रासंगिक हैं क्योंकि आधुनिकता की चकाचौंध में नारी की गरिमा को सुरक्षित रख पाना इन्हीं के आदर्शो के अनुसरण द्वारा संभव है। नारी को स्वयं ईश्वर द्वारा प्रदत्त गरिमा को सुरक्षित करने का संदेश श्रीरामचरितमानस के समस्त नारी पात्रों द्वारा प्राप्त होता है।

श्रीरामचरितमानस में लोक व्यवहार एवं लोकानुभव से संबन्धित अनेक उपदेश विद्यमान हैं जिनके पालन से समाज कुरीतियों के चक्र से मुक्त होकर सचेत रहते हुए सरलतापूर्वक अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक परिवेश को सुखमय बना सकता है। वर्तमान समय में अनेक प्रकार की कुरीतियों के व्याप्त होने के कारण सामाजिक परिवेश पतन की ओर उन्मुख है। बुद्धिजीवियों द्वारा चेतना का त्याग करने के कारण सामाजिक जीवन में अनैतिकता एवं दुराचार व्याप्त हो चुका है। ऐसी परिस्थिति में प्रत्येक कदम पर नीति पर आधारित श्रीरामचरितमानस की शिक्षा ही व्यक्ति को मर्यादा, सतआचरण एवं नियमों के पालन की प्रेरणा प्रदान कर सकती है। श्रीरामचरितमानस में केवल धार्मिकता ही नहीं अपितु शैक्षिक पहलुओं का विश्लेषण भी है जो मानव का समग्र विकास करके उसे समाज से जोड़ता है अतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली में श्रीरामचरितमानस में वर्णित शिक्षा से संबन्धित नीतियों का निरुपण किया जाना अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

उपसंहार–

संदर्भ–

1. कौशिक गीता, रामचरितमानस में नीति तत्व, अपनी माटी, ई पत्रिका, वर्ष–4 अंक–27 तुलसीदास विशेषांक अप्रैल–जून 2018
2. माथुर पीयूष किरण, श्रीरामचरितमानस एवं श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता– एक अध्ययन, नेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड इनोवेटिव प्रैक्टिसेस, Vol. 5 Issue 8, 2020 web: www.edusanchar.com

3- माथुर पीयूषकिरण, श्रीरामचरितमानस में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिवरिसर्च एण्ड इनोवेशन,Vol. 5 Issue 8, 2020

4- सरस्वती स्वामी ब्रह्मविदानन्द, अध्यात्म सरोवर दर्शन योग धर्माथ ट्रस्ट, आर्यवन, रोजड़, गुजरात, चतुर्थ संस्करण, अगस्त 2019, पृष्ठ संख्या

5- शर्मा अजय कुमार, रामचरितमानस में निहित शिक्षा के लक्ष्य, इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, सोशियोलाजी एण्ड ह्यूमैनिटीज, Vol 10 Issue 5 2019

6- सिंहवी राजेन्द्र कुमार, रामकथा के नारी पात्र वर्तमान में सर्वाधिक प्रासंगिक हैं, अपनी माटी ई पत्रिका फरवरी 2012

7- सिंह महेन्द्र प्रताप, रामराज्य और पर्यावरण, अनुसंधान विज्ञान शोध पत्रिका 2016,India Water Portal

8- सुमनलता, पाठक मानवेन्द्र, रामचरितमानस में पर्यावरणीय सम्पन्नता, जर्नल ऑफ एडवान्स एण्ड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजूकेशन

9- गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचरितमानस, हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रेस गोरखपुर, 32वां संस्करण सम्वत् 2017